डा. राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा

Topic -6 फ्रांस की सुरक्षा की खोज और लोकार्नो संधि (1925) भूमिका
French quest for security and locarno pact 1925.

प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918) के बाद यूरोप का राजनीतिक परिदृश्य पूरी तरह बदल गया। फ्रांस युद्ध में विजयी राष्ट्र था, किंतु इस विजय के बावजूद वह स्वयं को अत्यंत असुरक्षित महसूस कर रहा था। युद्ध ने फ्रांस के उत्तरी और पूर्वी क्षेत्रों को भारी नुकसान पहुँचाया, जनसंख्या में भारी कमी आई और आर्थिक संरचना बुरी तरह प्रभावित हुई। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि फ्रांस को भविष्य में जर्मनी से पुनः आक्रमण का भय सताने लगा। इसी भय और असुरक्षा की भावना से प्रेरित होकर फ्रांस ने 1919 से 1925 के बीच एक विशेष विदेश नीति अपनाई, जिसे "फ्रांस की सुरक्षा की खोज (French Quest for Security)" कहा जाता है। इस नीति का चरम बिंदु लोकार्नो संधि (1925) थी, जिसने अंतरयुद्ध कालीन यूरोपीय राजनीति को गहराई से प्रभावित किया।

1. प्रथम विश्व युद्ध के बाद फ्रांस की सुरक्षा संबंधी समस्याएँ
(क) जर्मनी से ऐतिहासिक भय,
फ्रांस का जर्मनी के प्रति भय ऐतिहासिक अनुभवों पर आधारित था।
1870–71 के फ्रांको-प्रशियन युद्ध में फ्रांस की हार
अल्सास-लोरेन का जर्मनी द्वारा अधिग्रहण,
1914 में जर्मनी का पुनः फ्रांस पर आक्रमण
इन घटनाओं ने फ्रांसीसी जनमानस में यह विश्वास गहरा कर दिया कि जर्मन साम्राज्यवाद फ्रांस के अस्तित्व के लिए स्थायी खतरा है।

(ख) जनसंख्या और आर्थिक कमजोरी,
फ्रांस की जनसंख्या जर्मनी से कम थी।
युद्ध में लगभग 14 लाख फ्रांसीसी सैनिक मारे गए।
औद्योगिक और कृषि क्षेत्र बुरी तरह नष्ट हो गए
इसके विपरीत, जर्मनी की जनसंख्या और औद्योगिक क्षमता अधिक थी, जिससे फ्रांस को भविष्य में जर्मनी की शक्ति पुनः उभरने का डर था।

(ग) वर्साय संधि की सीमाएँ
1919 की वर्साय संधि ने जर्मनी पर कठोर शर्तें लगाईं—
सेना सीमित की गई,
राइनलैंड को विसैन्यीकृत क्षेत्र बनाया गया,
युद्ध क्षतिपूर्ति (Reparations) लगाई गए,
फिर भी फ्रांस को विश्वास नहीं था कि ये प्रावधान स्थायी रूप से लागू रहेंगे। अमेरिका और ब्रिटेन द्वारा फ्रांस को स्थायी सैन्य सुरक्षा गारंटी न मिलना उसकी चिंता को और बढ़ाता था।

2. फ्रांस की प्रारंभिक सुरक्षा नीति (1919–1924)
(क) वर्साय संधि का कठोर पालन,
फ्रांस चाहता था कि जर्मनी पर लगाए गए सभी प्रतिबंध सख्ती से लागू हों।
जर्मन पुनःसशस्त्रीकरण को रोकना,
युद्ध क्षतिपूर्ति की पूर्ण वसूली, राइनलैंड का विसैन्यीकरण बनाए रखना।

(ख) रूहर/ रुर पर अधिकार (1923)
जब जर्मनी ने क्षतिपूर्ति देने में असमर्थता जताई, तो फ्रांस और बेल्जियम ने रूहर औद्योगिक क्षेत्र पर कब्जा कर लिया।
उद्देश्य था—
जर्मनी पर आर्थिक दबाव बनाना,
उसे कमजोर बनाए रखना,
लेकिन यह नीति विफल रही।

जर्मनी में भीषण मुद्रास्फीति हुई,
अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फ्रांस की आलोचना हुई,
ब्रिटेन और अमेरिका फ्रांस के विरुद्ध हो गए।

(ग) पूर्वी यूरोप में गठबंधन नीति
फ्रांस ने जर्मनी को घेरने के लिए कई गठबंधन किए—
पोलैंड,
चेकोस्लोवाकिया,
रोमानिया और यूगोस्लाविया (लिटिल एंटेंटे)
इनका उद्देश्य जर्मनी को पूर्वी विस्तार से रोकना था।

(घ) राष्ट्र संघ में विश्वास -
फ्रांस ने सामूहिक सुरक्षा के सिद्धांत को अपनाया और राष्ट्र संघ को अंतरराष्ट्रीय शांति का माध्यम माना, किंतु राष्ट्र संघ की कमजोरी जल्दी ही स्पष्ट हो गई।

3. नीति में परिवर्तन: बल से कूटनीति की और :

1924 के बाद फ्रांस को यह एहसास हुआ कि—
बल प्रयोग से सुरक्षा संभव नहीं।
जर्मनी को पूरी तरह दबाना अव्यावहारिक है।
यूरोप की स्थिरता सहयोग पर निर्भर है।
इसी दौरान जर्मनी के विदेश मंत्री गुस्ताव स्ट्रेज़ेमैन ने शांतिपूर्ण कूटनीति अपनाई, जिससे फ्रांस को नई राह दिखी।

4. लोकार्नो संधि की पृष्ठभूमि
ब्रिटेन ने फ्रांस और जर्मनी के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाई।
ब्रिटेन चाहता था—
यूरोप में स्थिरता,
फ्रांस-जर्मनी मेल-मिलाप,
फ्रांस का अत्यधिक प्रभुत्व न हो।

5. लोकार्नो संधि (1925) की प्रमुख धाराएँ -
(क) राइनलैंड संधि
जर्मनी, फ्रांस और बेल्जियम ने अपनी पश्चिमी सीमाओं की गारंटी दी।
ब्रिटेन और इटली गारंटर बने।
राइनलैंड के विसैन्यीकरण की पुष्टि।

(ख) मध्यस्थता संधियाँ
जर्मनी ने फ्रांस, बेल्जियम, पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया के साथ विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाने का वादा किया।

(ग) राष्ट्र संघ की सदस्यता
लोकार्नो के बाद जर्मनी को 1926 में राष्ट्र संघ की स्थायी सदस्यता मिली।

6. फ्रांस के लिए लोकार्नो के लाभ -

ब्रिटेन की सुरक्षा गारंटी,
जर्मन आक्रमण की संभावना में कमी,
अंतरराष्ट्रीय सहयोग में वृद्धि,
“लोकार्नो की भावना” का उदय,
फ्रांसीसी विदेश मंत्री एरिस्टाइड ब्रियांड ने इसे फ्रांस की बड़ी कूटनीतिक सफलता माना।

7. लोकार्नो की कमजोरियाँ
(क) पूर्वी सीमाओं की अनदेखी।
जर्मनी की पश्चिमी सीमाएँ सुरक्षित,
पूर्वी सीमाएँ (पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया) असुरक्षित।

(ख) जर्मन संशोधनवाद को प्रोत्साहन।
पूर्वी यूरोप में सीमाओं के संशोधन का मार्ग खुला।

(ग) ब्रिटेन पर अत्यधिक निर्भरता
फ्रांस की सुरक्षा ब्रिटेन की इच्छा पर निर्भर हो गई।

8. दीर्घकालीन प्रभाव
(क) अल्पकालिक शांति
1925–1929 के बीच यूरोप में स्थिरता और सहयोग बढ़ा।
(ख) दीर्घकालीन विफलता
1936 में राइनलैंड का पुनः सैन्यीकरण,
फ्रांस और ब्रिटेन की निष्क्रियता
लोकार्नो व्यवस्था का पतन।

उपसंहार :

प्रथम विश्व युद्ध के बाद फ्रांस की विदेश नीति का केंद्रीय लक्ष्य सुरक्षा था। प्रारंभ में उसने कठोरता और बल प्रयोग अपनाया, किंतु बाद में कूटनीति और सामूहिक सुरक्षा की ओर बढ़ा। लोकार्नो संधि (1925) फ्रांस की इसी सुरक्षा-खोज का परिणाम थी। यह संधि अल्पकाल में शांति और सहयोग का प्रतीक बनी, लेकिन दीर्घकाल में इसकी कमजोरियाँ उजागर हो गईं। फिर भी, लोकार्नो संधि अंतरराष्ट्रीय संबंधों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण प्रयोग के रूप में याद की जाती है।